

॥ आ ॥ ४ ॥

①

॥ श्रीरामविजयमंत्रवृत्तः ॥ यायप्रारंभः ॥ श्रीरामवरदमुर्तयेनमः ॥



(2)

श्रीगणेशायनमः॥ चतुरश्रोते करिति प्रभः॥ श्रुतियोध्याहनुमंतकथनं जन्मकथनः॥ सांगितलें
तुवांपुणी॥ कथाअड्डुतनवलचि॥१॥ आणि के पुराणि साचार॥ हनुमंत जन्म कथा प्रकारा॥ वेग
ळाअसे विचार॥ पथक पथक कथियेला॥२॥ तरि पुराणां तरिं विपरित॥ कथापजावयाका
यनिमित्या॥ त्याचें प्रत्योतर यथाथी॥ सांगसमस्त कथावया॥३॥ ऐसे श्रोतयांचें वाखाका॥
परिसे नियांक विकुशका॥ शब्दबोलें रसाका॥ परसासादर श्रोते हो॥४॥ अनादसिद्ध अव
तारमाका॥ जगदीशें गुंफित्या अवलिका॥ जैसा तरंग पुर्विजिका॥ व्यापुनिया असे॥५॥
जैशिराहाट घटमाळीका॥ तेविहे अवतार देवा॥ किंअभंग मित्रमंगाका॥ प्रदक्षणाक
रणे मेरुचि॥६॥ किंजपमाकेचे मणि॥ तेथीयेति परतोनि॥ तेसे अवतार ब्रह्मांड भुवनि॥
फोरतमाके सारिखे॥७॥ तरिकल परतें अवतार॥ जेजेनेके जेजेथरि॥ तेसेय बोलिका

(२५)

क

मलयवतिकुमर ॥ कथासांचारतितुक्याहि ॥ ८ ॥ येके अवतारोवर्तलें येक ॥ तोंदुसरेअ
 वतारिविशेषकोतुक ॥ तरितितुकोहि संतुदेख ॥ वीपरितार्थनमानिजे ॥ ९ ॥ रणामा
 जीयेकांगविर ॥ तैसाजाणिजेकनेश्वर ॥ परमश्रोतयांचाभार ॥ परमचतुरसादर
 जे ॥ १० ॥ सभानायअतिप्रविण ॥ करिसंदेहधनुष्यघेत ॥ प्रश्नाक्षरशरसोडित ॥ आ
 शंकासमयलक्षुनि ॥ ११ ॥ मगधैर्वैगडाकविनेमजोन ॥ चढविलेंस्युर्तिचेशरासन ॥
 शास्त्रसंमतबाण ॥ सोडीअभंगअनिवार ॥ १२ ॥ मखवोटिकाढुनसत्वर ॥ क्षमावेशे
 सोडिशर ॥ परमकौशल्यसाचार ॥ प्रश्नबाणछेदित ॥ १३ ॥ श्रोत्यांवक्तयांचेंसंधान ॥
 तटस्तपाठतिवीचक्षण ॥ धन्यधन्यमृणोन ॥ तजिनीमस्तकरोलुविती ॥ १४ ॥ आवेशा
 चढलेदोघेजण ॥ सप्रैमैकरितिनामस्मरण ॥ तोसधनघोषऐकोनि ॥ अवदसाश्वापद

॥रामची॥

दुरपकृति ॥१५॥ वक्त्यांचे बाण शर अत्यंत ॥ अर्थगौरवें मुरवळ खळखळीत ॥ पद्ये रच ॥ जय-॥
 नापक्ष मंडित ॥ सुरंगमीर खत साहित्यें ॥१६॥ ऐसे शर सुदृढां अपार ॥ भौदितें श्रोतयां
 चें अंतरा ॥ जोळवोळें तें शिर ॥ सुख उर्मिचें निभरें ॥१७॥ वैराव न सतां कोंचित ॥ हे आ ॥ २॥
 नंद्यांचें युध्य होत ॥ क्षीराब्धीच्या लहरिया मिळत ॥ जे शायेक मेकां शी ॥१८॥ नीः
 कपट श्रोता पुसत ॥ नीराभी मात वळवळत ॥ शब्द कों शल्यें आयुधें बहुत ॥
 जाणति पंजीत वीवे किं ॥१९॥ देव भक्तांचा अनुवाद ॥ तें थें काय आहे वैरसंमंथ ॥
 किंगुसुशिष्याचा बोध ॥ आनंद युधें शब्दांचो ॥२०॥ असोत बहुत युक्ति ॥ चातु
 र्य मथन पद्धति ॥ बर्म जाणें जें पंजीति ॥ साहीत्यारति कळाज्या ॥२१॥ कविची घ
 उमोळी बहुत ॥ युक्त सागरांचे रलें काढीत ॥ येकागकांचें प्रकार बहुत ॥ नीफ

॥२१॥

(38)

जवितसुगरणी ॥ २२ ॥ येक मुत्तिकेचे घटअपार ॥ येक तंतुचे पट्टविचीत्र ॥ येक हेमब
 हुतअकंकार ॥ हाटक घडणार करिजेसा ॥ २३ ॥ येके काळीं शिल्पीकार ॥ मुकदा
 खविअपार ॥ तैसा जो कविचतुर ॥ शब्द साहित्यं विवरि ॥ २४ ॥ असो हेचातुर्यबो
 लणे ॥ सांगीतले श्रोत्यां कारणें ॥ पुढें पुनः कथापरिसणे ॥ श्रीधरचतुरां विनवि ॥ २५ ॥
 मागे रसाक कथाबुसंधान ॥ त्रीतियां ध्यानी रोपण ॥ सांगीतले हनुमंतजन्मक
 थन ॥ मुकगंध आधारें ॥ २६ ॥ शिंकविकाकनंतलत ॥ श्रोतिपरिशिजे मागि
 लकथा ॥ तिघिराणीयां जालीयागभस्त्रा ॥ कों शल्यासुमीत्राकें ॥ २७ ॥ जैसा शुद्ध
 बीजेच्या मुगांक मकीं पकोपकोंचढे अर्क म प्रकाशपडे अधीकाधीक म उदयादो
 हुनी पश्ये ॥ २८ ॥ कौरितां संतसमागम म दीवसै दिवस वाढे प्रेम म कीं ओदार्थ

५। रामबीज्य

॥३॥

(५)

करनपरम ॥ कीर्तिवाढे सत्वर ॥२९॥ ते संराणीयांचे गर्भ वाढति ॥ तव वशिष्ठ बो
ले दशरथाप्रति ॥ रायाधर्मशास्त्री ऐशिरिति ॥ जोह के स्त्रीयां सपुस्रावे ॥३०॥ ऐ
संबोले तू ब्रह्म ऋषि ॥ हर्षवाढे लारायाशि ॥ नमुन वशिष्ठ चरणाशि ॥ राजे द्रते कंवा
लिका ॥३१॥ शचीचीयामंदिरांत ॥ जे सावत शत्रु प्रवेशत ॥ ते सान्य अजपाक सुत ॥
कैकै सदन प्रवेशला ॥३२॥ पीउ प्राशनाचे काकिं ॥ कैकै होतित्तसली ॥ म्हणे नीरा ॥३३॥
जे द्रते वेळीं ॥ तिचे सदन प्रवेशला ॥३४॥ दुत जाणवीति स्वामिणीतें ॥ जोह के पुसा
वयातु हांतें ॥ नृपति स्वये येत येथें ॥ सुमुहुर्त पाहोनीयां ॥३५॥ सुंदरपणाचा अभी
मान ॥ त्या हि बरि कैके गभीणि ॥ जेशि त्रलपवीद्या गवपुर्ण ॥ ते संयेथें जाहालें ॥३६॥
जेशि गारुडीयांची वीद्या किं चीत ॥ परि व्रीदें बाधें बहुत ॥ कीं नीरी शिकवाहत ॥

रूपअभीमानविशेषै ॥ ३६ ॥ बींदुमात्रविषयश्रीका ॥ परिपुछाग्रवरतादेखा ॥ ३७ ॥
 कींकिचीतज्ञानहोतांमुखी ॥ मगतोनेमानिब्रह्मस्यतितें ॥ ३८ ॥ स्वणाराशिदुग्धकींची
 ता ॥ परिकृताप्रहरदेवहुत ॥ अल्पोदकउंचवकत ॥ आंगभीजतबाहकांचें ॥ ३९ ॥ ते
 सेंकेकेसजाकेतेवेकीं ॥ प्रीतिनेदशरथआलाजवकी ॥ आपणशेजेवरिवैसकी ॥
 नाहिंउठलिरावदेखतां ॥ ४० ॥ कांहींव्यापादातथें ॥ नधरिदेखतांनरपनाथ ॥
 मगउभाराहोनदशरथ ॥ जोहकेपुसततीलागीं ॥ ४१ ॥ म्हणेकेकेबोलवचन ॥
 तुझजेंआवजेलमनातुन ॥ तेमिसमस्तपुरविन ॥ सत्यजाणप्रियकरे ॥ ४२ ॥ ५॥
 मगकायबोलेतीयेवेके ॥ तुम्हीकायपुरवालमाझेजोहके ॥ माझेमनींचेसोहके ॥ पु
 णकितीदिसेना ॥ ४३ ॥ मगबोलेअजनंदन ॥ तुजकारणेवेचीनप्राण ॥ परिजोह

॥रामकी

॥जय॥

॥४॥

ॐ

केतुसैपुरविन॥सत्यजाणसकुमारो॥४३॥मगध्रणेजोनपवरा॥जेहकेमासै
हेचीअवधारा॥केशल्यासुमित्रेच्यापुत्रो॥दिगांतरादकणवे॥४४॥पाठवावे
दुरकानन॥॥त्याचासमाचारपुढाकेकेन॥आमचेवर्तमानसांचेकणी॥स
हसाहिनवजावें॥४५॥राज्यद्यावेंमाझीयांपुत्रा॥हेचीजेहकेहोतिराजेंद्रा॥
तुम्हीप्रणाकहाअधमखरा॥तोहोपदवविधालिजे॥४६॥मजनींदिति
सकळलोक॥तोतोवाटेकसुख॥सनस्तजनीकावेदुःख॥हेचीमजआवडे॥४७॥
ऐसेकेकेवेदेतयेअवसरि॥ऐकतानपरवोचलाअंतरि॥किवाकाकजींधा
तलि,सुरिफीवांआंगावरिचपकापडे॥४८॥वचननकेतलिकेवक॥दुः
खवलीचीश्रेष्ठफकें॥कीहकाहकसंचरले॥सुदईवाटेदशरथा॥४९॥

॥४॥

वाटे पर्वत को सकला ॥ का क स प जी का गि शो ब का ॥ कित स श स्र धाय प उ का ॥ ओं
 गां वरि अ क स्मा त ॥ ५० ॥ के के क क शो द्र व व च न ॥ प्रा शि के आ यु ख्य सा गर जी व ना रा
 व घा बी रा च तुरा न न ॥ वे द हार ण के के जे कां ॥ ५१ ॥ पर म खे द पा व का न प व र ॥ ती स ने
 दि य प्र त्यो त र ॥ म ग सु मी त्रे ये मं दि र ॥ प्र वे श ता जा का ॥ ५२ ॥ सं सार तो पे सं त स ॥ ते स
 त स मा ग मे नी व त ॥ ते सा च रा जा द श र धा सु मे त्रा स द नि सु र वा व का ॥ ५३ ॥ ति चे ना व
 सु मी त्रा स ति ॥ परि ना मा ऐ शि य अ से गि ति ॥ व र क उ ना वे जे दे वि ति ॥ ते तो जा ण व्य र्थ
 थी ॥ ५४ ॥ ना व टे वि ले उ दार क र्ण ॥ आ उ का व ची तां जा य प्रा ण ॥ ब्र ह्म स्य ति ना व ज्या का
 गु न ॥ ध उ व च न बो क तां न ये ॥ ५५ ॥ क म क न य ना ना म वि शे ष ॥ परि दो हिं उ के का वा
 ठ ले व उ स ॥ क्षी र सीं धु ना व पु त्रा स ॥ परि त क त्या सी मी के ना ॥ ५६ ॥ ना व टे वि ले प

॥ रामविरजय

॥ ५ ॥

⑥

ध्यानन ॥ परिजबुक देखतां पके उदोना ॥ जन्मगेला मागतां कोरां न्हा ॥ सावीभो
मनामजया ॥ ५७ ॥ नावटे विलें जया मदन ॥ तो विरपआणी कुकक्षण ॥ तें शिसु
मित्रानके पुणी ॥ करणी नावा सारिखी ॥ ५८ ॥ नपआला ऐकतां कणी ॥ साभो
रिआलिहं सुगामिनी ॥ दशरथाची ये वरणी ॥ मस्तकटे विसद्गावे ॥ ५९ ॥ त्वि ॥ ५ ॥
यां शिंदेवत तो आपुला नाथ ॥ पुत्रादेवमातापीतासया ॥ शीव्यासगुरुदेवता ॥ ग
हस्तास अतितें देवत होया ॥ ६० ॥ सणो निसु मित्रेनें अजनंदन ॥ पुजीला षोडशो
पचारें करन ॥ उभीटां कीली करज ॥ ६१ ॥ अधो वदन सल्लज ॥ ६१ ॥ कैकैडो
हुकेया चंद्रुः ख प्रबक ॥ राव विसरला तेकां सकक ॥ जेसा बोधट सावतांनी
मक ॥ तमजाक वितकें ॥ ६२ ॥ राजा सणो सुमीत्रेशि ॥ काय उठके होता ति मनासी ॥

(68)

तेमजसांगनिभ्येशिं॥ कुरंगनेत्रेसुमीत्रे॥दि३॥ मगइस्पीतहांस्यकरुन॥ बोलेसंक्ल
 जअधोवदन॥ जेऐकतासुखप्रसन्न॥ अजनंदनहोयेपे॥दि४॥ क्षणेहेचोआकडव
 हुवस॥ कोशल्यागर्भीजगं नीवासअवतरेकआदिपुरुष॥ जगदंध्यजगदासा॥दि५॥
 त्याचीअहोरात्रशेवाबरवि॥ वाटेममपुत्रेचीकरावि॥ जाणीं वशाहाणीवआघ
 वि॥ बोवाकावीतयावरुनि॥दि६॥ शेवंपरतेथोरसाधन॥ ममपुत्रासनमानोआन॥
 आपुल्याआंगान्येआधरण॥ जेष्टशेवनालागिकरो॥दि७॥ त्रीभुवनराजेत्रणा
 समान॥ त्याहुनजीधीकजेष्टभजने॥ चारिमुक्तीवाठतिगुण॥ जेष्टशेवनापु
 टेपे॥दि८॥ सुधारसत्यजुननिर्मक॥ कोणाआवडेकहकाहक॥ उत्तमसांडुन
 तांदुक॥ शिकताहोकोसिजवावि॥दि९॥ तजुनसुंदररायकेके॥ कोणभक्षीलअ

॥रामचिजव

अकीफिके ॥ कल्पदमिजो विहंगमखेके ॥ तोनातके बाभुके शिं ॥ ७० ॥ मान
ससरोवरिं चाहं सपाहिं ॥ तोकदानराहे उत्स्र गरहिं ॥ बुद्धिदिधकी क्षीराब्धी
जेहिं ॥ दग्धवननावडे त्या ॥ ७१ ॥ नंदनवनिं चाभ्रमरकदांका कीं ॥ अकी
(पुष्पीरक्षी नद्या की ॥ ईदभुवनिनीद्राके ति ॥ तेसीमनी आवडिधरिलि ॥ क
दाविषईनरमेतो ॥ ७२ ॥ हणोनी राजकंधकंधकंधुजमणि ॥ माशिआवजी
जेछभजनी ॥ ऐसें सुमीत्रे ये शब्दकर्णी ॥ आकर्णीतेदशरथें ॥ ७३ ॥ वाटेअम ॥ ७४ ॥
तप्राशनकेलें ॥ कीं त्रीभुवनराज्याला आलें ॥ तेसें नपाये मनसंतापले ॥
आळंगीलें सुमित्रेशि ॥ ७४ ॥ हणोऐक सकुमारे राजसे ॥ चंपकककीकेप
रमजेकसे ॥ तुवां जेहके इछीले ते मानसे तेमि पुरबिनसर्वस्वें ॥ ७५ ॥ ७५ ॥

॥६॥

७

नानाभुषणें अकंकार ॥ बों बाकी तिज वसन न पवर ॥ दान देव विअपारा ॥ सुमित्रेच्या
 हस्त कें याच कां ॥ ७६ ॥ या उपरि जे जे करणी ॥ कों शल्या नावे ज्ञान स्वाणि ॥ जे पुराण पु
 रवांच्यो जननी ॥ श्रीभुवनी जीचे नखात पै ॥ ७७ ॥ परब्रह्म रसाच्यो मुस ॥ कीं नीज प्रका
 शरत्न मांदुस ॥ क्षीराब्धी हृदय विलास ॥ जेणें अंतरि सांठविला ॥ ७८ ॥ जो ईंदिरा वरत्री
 भुवनेश्वर ॥ जाचे आज्ञाधारक शर्येवर ॥ हृदय ध्याय अर्पण विर ॥ कों शल्या हृदय नी
 वाशिजे ॥ ७९ ॥ असो कों शल्ये मे मंदिर ॥ रवे शता जाता आवणारि ॥ शेव करालि के बा
 हिरि ॥ दार मर्यादा धरो नियो ॥ ८० ॥ कों शल्या ज्ञान कळा परम ॥ तिस अंतर्बाल्य व्यापि
 लाराम ॥ धराचर अवघे परब्रह्म ॥ नदिसे विषम कहाहि ॥ ८१ ॥ सांडुन जागति शुश्रुती
 त्यज ॥ नयनि लयाहि ज्ञाना जन ॥ धराचर अवघे नीरंजन ॥ तपदिसे कों शल्या ॥ ८२ ॥

दशरथ प्रवेशो निअंतरि ॥ पाहे स्फुट बोसरिवरि ॥ मग सुहृम देह माईं धरि ॥ नदि सेक
 हा कौं शल्या ॥ ८३ ॥ कार हा कोठ उत पाहे सादर ॥ तंव तेथें अवधा आंधरे ॥ मग माहा
 कास्य उपरि थोर ॥ त्या वरि न पवर चदी नला ॥ ८४ ॥ तेथें हि नदि से कौं शल्या सति ॥
 चकित पाहे न पति ॥ जीव्ये उदरीं सांठवला जग सति ॥ तिथी स्थिति कळे ना ॥ ८५ ॥ म
 ग परासर पर सांत ॥ प्रवेशता होय अजपा कसुत ॥ तो वेसलि समाधीस्त ॥ नीवी क
 ल्य वक्षांत की ॥ ८६ ॥ अंतर द्विष्टि मुखी ॥ ब्रह्म नंद सपलालि ॥ वरद क स्वनाम वि
 सरि की ॥ नचाळे बो लि देतांची ॥ ८७ ॥ जे सास तेज परम मित्र ॥ तेथें उगनलागे
 अणु मात्र ॥ स्वस पिप्रघटतां योगेश्वर ॥ ज्ञान राहें ऐलिकडे ॥ ८८ ॥ कल्यांत विज
 मस्य कगी कि ॥ पीः पली कामेस कक्षे शिवाली ॥ धेनु वध मग द्राशि आकळी ॥ येरवा

(४९)

देवके घडे लहे ॥ ८९ ॥ परिचंतुराई स्थिर पावरि ॥ नया ले नया ले नीधारि ॥ श्रोत्रीयाचे यज्ञ
 शाके भीतरि ॥ कोंठे मातारी प्रवेशे ॥ ९० ॥ वज्रवांन कां पुढे कपुरजाण ॥ किंजळनीधि
 माजी लवण ॥ तैशिवुधी आणी मन ॥ स्वसुरवा वरि विराळें ॥ ९१ ॥ असो स्वानंद साग
 रांत ॥ कौंशल्या पुण समाधीस्त ॥ जवळी उभाठी कला दशरथ ॥ पाहे तटस्त उगाची ॥ ९२ ॥
 कौंशल्या स्वरूपिनी न ॥ हे दशरथा शिनेरा वरुण ॥ क्षणे हे सती पुण ॥ तरिच व
 यन न बोले ॥ ९३ ॥ प्रणो नयक युग मणी ॥ कौंशल्ये जवळी बो सोनी ॥ जे हे तिसर
 दई धरन ॥ समाधान करितसे ॥ ९४ ॥ तव तेनु घडिच नयन ॥ नाहिं स्वशरिराचे स्म
 रण ॥ मी स्त्री हा पुतळ भाव ॥ गेली विसरोन कौंशल्या ॥ ९५ ॥ अकंकार केचे येक सुव
 र्ण ॥ तरंग लटिके येक जीवन ॥ तैसें विश्व नाहिं येकर घुनंदन ॥ आनंद घन विस्तारका ॥ ९६ ॥

(9)

॥५॥

ऐशिकों शक्त्येची स्त्री तिजाकी म राजासणे हे श्रुतकी ॥ महदु तेहे घेतली ॥ बोक
 कखमोउ किइयेची ॥ १७॥ राजासणे देवसुखीसीध ॥ इहिं दिधला आशिबीद ॥ १८॥
 किपोयायेइतिब्रह्मांनंद ॥ आदिपुरुष श्रीराम ॥ १९॥ एकतांरामनामस्मरण ॥ को
 शक्त्येने उद्यतिले नयन ॥ तो जगदाभाससंपूर्ण ॥ रघुनंदन रूपदिसे ॥ २०॥ राजास
 णे नितंबीनि ॥ कुरंगने त्रेगजगामिनि ॥ कान्हेबावडिजेसेलमनि ॥ जोहके पुरवि
 नसेवती ॥ २१॥ भ्रमयकिबोकवचन मते ॥ कोशक्त्याबोले गजोनि ॥ मिजगदासा
 रघुनंदन ॥ कैचे अज्ञानमजपाशि ॥ २२॥ दुकलींग आशीकारण ॥ याहुनमा
 शेस्वसपभीन्नि ॥ माहं कारणहि निरसुंन ॥ आत्मारामवेगकामि ॥ २३॥ दैतअ
 दैतमाहादैतयाहुन वेगकामिअतित ॥ संधीदानंदशब्दजेथें ॥ खुंटोनीयां राहिका ॥ २४॥

(१४)

जीवशिखदो निपक्ष ॥ ध्याता ध्यानलयकक्ष ॥ आवेग का मि सर्वसाक्ष ॥ अजीत अलक्ष
 श्रीराम ॥ ४ ॥ राजासुरे कौशल्ये ऐकें ॥ मीको ए ओहं मजबोकरे ॥ ओहके पुसा बया मह
 सुरे ॥ तुज जब की बेसकों ॥ ५ ॥ ये रिशने ज्ञाता ज्ञेय ज्ञान ॥ हे सव गैलें आदोन ॥ नाहिं स्त्री
 पुरुष न पुंस के पै ॥ मीतुं पशते थके ॥ ६ ॥ न पक्षणे हे मह दुते चेत कि ॥ वोकरे सर्व ही
 मोड कि ॥ मग पुसे गोख मागिल ॥ धाकु टपा प्यो तियेत ॥ ७ ॥ राजासुरे शशाक वदने ॥
 गुण सरिते पद्म नयने ॥ बरा उखु उन्नतु जरा वगे ॥ नेलें होतें आठ वते कीं ॥ ८ ॥ शत्रु ये
 नाम ऐकें तां कर्णों ॥ हाँक फोडि लिभु जाय कुनी ॥ श्रणे धनुस्य बाण दे आणुनी ॥ टाकि
 न छेदुन दाहि शिरें ॥ ९ ॥ ताटिका मारुनी यां आधी ॥ ऋषियाग पाव विन सीधी ॥ माहं
 राक्षस बधुन युधी ॥ गांधी तनय तोष विन ॥ १० ॥ शिव चाप परम प्रचंड ॥ मोडुन करि न दुखंड ॥

माझी ज्ञानशक्ती जे अखंड ॥ पराजितां कोन आणी नमि ॥ ११ ॥ जेणे नीक्षेत्री केली अ
 वनी पुणी ॥ त्याचा गर्व हरि न नतगत क्षण ॥ येक पत्नी मिरधुनंदन ॥ प्रीति नवन
 पाकक ॥ १२ ॥ मिशे विनघोर विपिनी ॥ परिवारे शिरो शिराखरदुषण ॥ क्षणमात्रें द
 किन वधुन ॥ अग्नी तण जाकी जैये ॥ १३ ॥ रिसवान्तरां हाति ॥ लंकाघात विन पा
 लधि ॥ माझा वज्र देहि मारुति ॥ परमपुरुषार्थि माहां विर ॥ १४ ॥ क्षणे लाकुन लंका
 नगर ॥ शत्रुचीं शीरे छेदिन अपार ॥ पाषाणे पाताळुन समुद्र ॥ लंका पुर घेई निमि ॥ १५ ॥
 कौशल्या हा कफोडी दारण ॥ लंके पुढे माज विनरण ॥ माहां दीसा ककुंभ कर्ण ॥
 टाकी न छेदुन क्षणाधी ॥ १६ ॥ सह परिवारे वंधुन दशा शीर ॥ बंदिचे सोडवि न सकळ
 सुर ॥ माझा विभीषण प्रीय कर ॥ छत्र धरवी न त्या वरि ॥ १७ ॥ स्वपदि स्थापुनी यां भक्त ॥

मिअयोध्येशियेईनिरघुनाथ ॥ आधीव्याधीजरा मल्य ॥ याविरहितकरिन प्रजा ॥ १८ ॥
 स्त्रिपुसषनपुंसकभेद ॥ येवेगका मिब्रसंनंद ॥ मायाचक्रचक्रकभुध्द ॥ नीळकंक
 अभेदपै ॥ १९ ॥ मीप्रकयकाशिंशासनकती ॥ मीआदिमायेयानीजभती ॥ कतीह
 तीपाकीता ॥ मजपरतानसेची ॥ २० ॥ मीअजअजीतसर्वेश्वर ॥ मीचनटकोंचरा
 चर ॥ धरुनननावतार ॥ मजमाजीमिसा नावे ॥ २१ ॥ ऐसेंऐकतांदशरथ ॥ प्रणेषु
 तेंद्येतलियर्थीर्थीफाटाफुटकाबहुत ॥ ब्रह्मजीतभक्ततेची ॥ २२ ॥ पंचाक्षरिआणापाचा
 रन ॥ माहाराजसदुरुज्ञानधन ॥ तोसरशिजेद्धवनंदन ॥ बोलाउनआणावेगें ॥ २३ ॥
 जेणेदर्भावरिधरिलीधरणी ॥ शादीस्यदनावरिपसरोनी ॥ ईद्रसभेसनेकावासरम
 णि ॥ अद्भुतकरणीजयानी ॥ २४ ॥ वशिष्ठआलाधांवोन ॥ राजादृढधरिचरण ॥ २५ ॥

॥रामबी॥

॥१०॥

(11)

॥जय॥

॥१०॥

रूपे कौंशल्ये सा रिखे नीधान ॥ भुते संपुर्ण ग्राहिले ॥ २५ ॥ म्यायाग कर बिल्लासायाशि ॥
किंपुत्र होइलि कौशल्ये शि ॥ तो मध्ये च हे वी वशि ॥ उदीलि ऋषिकाय करं ॥ २६ ॥ मगक्षणे ब्रह्म
सुत ॥ इच्या पोटाये इकर घुनाथा ॥ तिसहे गोख विपरित ॥ काक त्रई घडेना ॥ २७ ॥ अंध कुपी पडे
ल तरणि ॥ कोरां न्न मागे लघोता मैणि ॥ सुधार सगे ला क उव दोनी ॥ काक त्रई घडेना ॥ २८ ॥ धुधे
ने पिडिला क्षीर सागरा ॥ सुरतरस येई लहरि ॥ तिव तापे लरोहिणि वर ॥ काक त्रई घडेना ॥ २९ ॥
असो वशिष्ठ कौशल्ये जवकी ॥ येउन विले किनये काकिं ॥ तंव ते श्रीराम सप जालि ॥ अंत
र बाह्य समुक् ॥ ३० ॥ नदिसे स्त्री येथी आ जति ॥ धनुष्य बाण घेउन हातिं ॥ आकर्ण वरिने
त्र विराजति ॥ देखे मुर्ति जग दंडा ॥ ३१ ॥ मुर्ति पाहातां आनंद घन ॥ सद्गद जाला ब्रह्म नं
दन ॥ अलक्ष भाव दाटले पुर्ण ॥ गेला विसरो नि देह भावा ॥ ३२ ॥ वशिष्ठ कौशल्ये ते अवस



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com